राजद्रोह विनोद दुआ से हार गया

विजय शंकर सिंह

विनोद दुआ पर दर्ज सेडिशन यानी राजद्रोह का मुकदमा सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया है।

यह सरकार हर उस व्यक्ति के पीछे पड़ी है जो उससे सवाल पूछता है, उसकी कैफियत और हैसियत पर सवाल उठाता है और संविधान के मौलिक अधिकारों में दिए गए अभिव्यक्ति की आजादी के अधिकार का एक नागरिक के रूप में उपयोग करता है। विनोद दुआ के खिलाफ दर्ज मुकदमें का खारिज होना, सरकार के जिद अहंकार और ठसपन पर एक संवैधानिक चोट है।

अभी यूपी में सूर्य प्रताप सिंह के खिलाफ 6 मुकदमे दर्ज हुए हैं। आरोप यही है कि उन्होंने कुछ चुभते हुए सवाल, कोविड संक्रमण, अस्पतालों की बदइंतजामी, गंगा में बहते शव, और सरकार की नाकामी पर ट्वीट कर के पूछ लिये। सरकार को चाहिए था कि वह इन सवालों का जवाब देती और अपना पक्ष रखती, पर उसने धौंस में लेने के लिये उन पर मुकदमे दर्ज कर दिए। सूर्य प्रताप सिंह को इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच से राहत मिली है और अदालत ने उनकी गिरफ्तारी पर रोक लगा दी है।

सुप्रीम कोर्ट के जज जस्टिस चंद्रचूड ने यूपी सरकार के ऊपर तंज कसते हुए कहा है कि "अखबारों में गंगा में बहते शव की खबरों पर, देशद्रोह का कोई मुकदमा सरकार ने अभी दर्ज किया है या नहीं।"

देश और देशद्रोह को जितना हल्का इस सरकार ने, जरा जरा सी बात पर सेडिशन का मुकदमा दर्ज कर बना दिया है उतना तो ब्रिटिश राज ने भी नही किया था।

जनता को डरा कर उस पर राज नही किया जा सकता है पर एक लोकतांत्रिक गवर्नेंस की यह छोटी सी, पर बेहद महत्वपूर्ण बात, इस सरकार के लोगो को बिल्कुल समझ मे नहीं आएगी।

एक कहानी याद आई सुनो

परमिन्दर सिंह

एक गाँव मे एक गर्वीला सांड रहता था। उसके सींग बड़े सुंदर फैले हुए थे और माथा चौड़ा उज्वल था। उसी गाँव मे एक छप्पनिया मुंहबली रहता था। वह सपने देखता की अगर वह इस सांड के माथे पर दोनों सींगों के बीच बैठ कर गांव का चक्कर लगाए तो उसकी वाह वाह हो जाएगी, वह महाराज सा फील करेगा।

बहुत दिनों तक वह सपने देखता रहा, ओर मन की बात हर हफ्ते चौराहे पर जोर जोर से सुनाता। उसकी सुन कुछ ज्ञानियों ने कई बार मुंहबली को यह गलती न करने को समझाया। पर मुंहबली भहुत अड़ियल ओर जिद्दी था।

बोला अब तो वह यह कर के ही रहेगा। एक दिन कूदकर उस सांड के माथे पर बैठने की कोशिश करी। सांड ने छप्पनिया को उठाकर 56 फीट दूर फेंक दिया। लोग हंसने लगे। छप्पनिया उठकर कपड़े झाड़ते हुए बोला चलो चंद सेकंड ही सही! सींगों के बीच महाराज जैसे तो बैठा अब झोला उठा कर जाने में ग्लानि नहीं रहेगी।

आईटी सेल की नौकरी का असर

दीपक असीम

मेरा बेटा आवारा हो गया है। पिछले दिनों एक महिला का हाथ पकड़ लिया। महिला चीखी चिल्लाई और शोर मचाकर उसने पूरा मुहल्ला इकट्ठा कर लिया। मेरे

बेटे ने कहा कि उस औरत ने ही इशारा करके बुलाया था और कहा था कि आते समय पांच सौ रुपये लेते आना। मैं जानता हूं कि वो औरत बहुत चरित्रवान है। मैंने माफियां मांगी, मगर मेरी माफी से ज्यादा असर मेरे बेटे के झूठ का हुआ। वो औरत अगर रिपोर्ट लिखाती तो मेरा बेटा उसे बदनाम कर डालता।

घर पर लाकर मैंने बेटे को उसके ओछेपन का अहसास कराना चाहा, तो उसने कहा कि दादा जी ने लव मैरेज किया था। आपने खुद किया है और मुझे कोने में लाकर

उपदेश दे रहो हो? मैंने कहा कि हमने प्यार किया था, शादी की। बलात्कार की कोशिश नहीं की। उसने कहा जानता हूं आपको भी और आपके बाप को भी। कहां कहां मुंह काला किया है, सब रेकार्ड है मेरे पास। आपके मुहल्ले में सुषमा आंटी रहती थीं या नहीं रहतीं थीं? हमारे पूजनीय दादाजी ने उनके साथ क्या किया है बताऊं? आप खुद प्रज्ञा जोशी नाम की लड़की को लव लेटर लिखते थे। उसके भाइयों ने आपको पीटा भी था।

यह दोनों ही बातें सफेद झूठ हैं। ना मेरे पिताजी ने किसी सुषमा को छेड़ा और ना मैंने कभी किसी प्रज्ञा जोशी को लव लेटर लिखे। मगर मेरा बेटा ऐसे कांफिडेंस से झूठ बोल रहा था कि मैं सन्न रह गया। सच तो यह है कि इतनी

पुरानी बातें उसने निकाली कि साबित भी नहीं कर सकते झूठ है। पत्नी सुन लेती तो इसे सच मान लेती, लिहाजा मैं चुप लगा गया। दरअसल जब से मेरा बेटा एक सियासी पार्टी की आईटी सेल में काम करने लगा है, तब से अपनी करतूतें छिपाने के लिए घर के पूजनीय और सम्मानीय बुजुर्गों पर तोहमत लगाने लगा है। उसे पता है कि तोहमत लगा दो, तोहमत की सफाई मुश्किल काम है। फिर

ज्यादातर बेवकूफ तो ऐसी किसी तोहमत को सच मानने के लिए उधार बैठे ही रहते हैं।

वो खुद हर गलत काम करता है। शराब पीता है, टोको तो कहता है कि हमारे परदादा की मौत तो शराब कांड में ही हुई थी। यह बात सौ प्रतिशत झूठ है। मगर लोग तो सच ही मानेंगे। उससे कहो गलत जगहों पर मत जाया करो, तो कहता है आपके बड़े भाई को एड्स है, मेरी चिंता मत करो, मैं प्रोटेक्शन रखता हूं। सच यह है कि मेरे बड़े भाई दिल के मरीज हैं। मगर पड़ोसियों को क्या पता? वो तो यही समझ सकते हैं कि हम हार्ट अटैक का बहाना बना रहे हैं। लोग उनका हालचाल पूछना छोड़ सकते हैं। उसका कान्फिडेंस से झूठ बोलना मेरे लिए मुसीबत बनता जा रहा है। सबसे बुरी बात तो यह है कि अपने ही घर के बुजुर्गों को ज़लील करते हुए उसे शर्म नहीं आती। झूठ बोलता है और बोलते ही यकीन करने लगता है कि उसने

सच बोला है, बल्कि जो उसने बोला है, उससे ज्यादा सच तो कुछ और हो ही नहीं सकता। लगता है उसकी आईटी सेल वाली नौकरी छुड़वानी पड़ेगी।

जब आजाद ने सावरकर को कहा था हरामखोर...

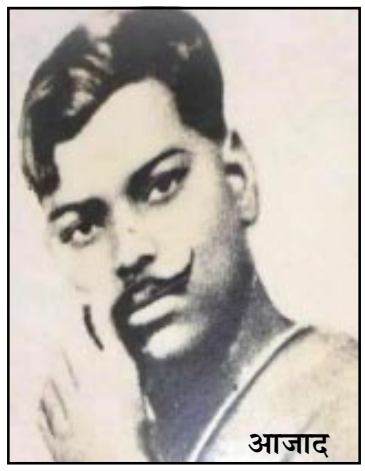

भगत सिंह और अन्य साथियों की गिरफ्तारी के बाद पार्टी की स्थिति कमजोर हो गई थी, दल के पास पैसे का भी संकट था, ऐसे में चन्द्रशेखर आजाद ने आर्थिक मदद की आशा में उन्हे (यशपाल) को सावरकर के पास पूना भेजा। यशपाल ने लिखा है कि जब वह उनके निवास स्थान पर पहुंचे तो उन्हे ढाई घंटे इन्तजार करना पड़ा क्योंकि सावरकर अन्दर पूजा में व्यस्त थे। जब वह पूजा करके बाहर निकले तो यशपाल ने अपना परिचय देते हुये आजाद का संदेश दिया। यशपाल के अनुसार सावरकर ने कुछ देर विचारकर कहा कि अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई मे मै आप लोगों की कोई मदद नहीं कर सकता, हां ! अगर तुम लोग मोहम्मदट्ठअली जिन्ना को मार देने का वादा करो तो हम तुम् लोगों के लिये एक के बजाय तीन विदेशी रिवाल्वर दे सकते हैं।

जब यशपाल ने लौटकर यह वृतांत आजाद को सुनाया तो उन्होंने गाली देते हुये कहा कि "हम सक्रान्तिकारी हैं और इस हरामखोर नें हमे किराये का हत्यारा समझ रखा है।"

सावरकर सम्बंधित इस घटना का उल्लेख भगतसिंह के क्रन्तिकारी साथी और प्रसिद्ध उपन्यासकार यशपाल ने अपनी पुस्तक आत्मकथा "सिंहावलोकन" (1952) में किया है। यशपाल की किताब पढ़कर सावरकर के सपोलों को चुल्लू भर गौमूत्र में नाक रगड़ के प्राणत्याग के अपने नागनाथ के पास प्रस्थान कर जाना चाहिए।

-राधारमण त्रिपाठी

देश अलग-अलग, विचारधारा एक

4 अप्रैल 1968 की घटना है नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मार्टिन लूथर किंग जूनियर की महज 39 वर्ष की उम्र में हत्या हो गई थी। पूरे अमेरिका में शोक की लहर थी। इस खबर के फैल जाने से गोरे और काले लोगो के बीच बरसो से चली आ रही तनातनी अब और उग्र रूप धारण कर सकती थी। पूरा अमेरिका बारूद के ढेर पर बैठा था...दंगे शुरू हो गए थे।

फिर अचानक से राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार रॉबर्ट केनेडी एक ट्रक की छत पर चढ़कर दंगों के बीच काले लोगो की बस्ती मैं जाकर घोषणा करते है - "आज मैंने अपने दूसरे भाई को खोया है। उसी तरह खोया है। उसी लड़ाई में खोया है। मैं आपके साथ बैठ रोने आया हूँ। आपके मन में आक्रोश होगा कि गोरे लोग इसके जिम्मेदार हैं। तो यह गोरा आपके बीच खड़ा है। आप अपना आक्रोश मुझ पर उतार लें। यह वक्त अमेरिका को एक साथ खड़े होने का है, मार्टिन लूथर किंग के वाशिंगटन में देखे स्वप्न के पूरा करने का। उस नयी सुबह देखने का। जब एक गोरा किसी अश्वेत की मौत पर उसके कंधे पर सर रख कर साथ रोए, और एक अश्वेत एक गोरे की मौत पर।" पूरे अमेरिका में दंगे शांत हो गए थे।

30 जनवरी 1948 को बापू की हत्या कर दी जाती है। बापू दंगे रोकने के लिए खुद उपवास पर बैठ जाते थे। वो खुद दंगे की जगहों पर जाकर अपनी जान की परवाह किये बगैर अहिंसा से उन दंगो को रोक पाने में सफल हो जाते थे। मार्टिन लूथर किंग जूनियर बापू को अपना आदर्श मानते थे और अहिंसा और सत्याग्रह को नस्लीय हिंसा से लड़ने का प्रमुख हथियार मानते थे। बापू और मार्टिन लूथर किंग की हत्या करने वाली विचारधारा एक ही थी लेकिन देश अलग अलग थे। बापू की हत्या के बाद जवाहर ने राष्ट्र के नाम संदेश में कहा कहा था कि पिछले वर्षों और महीनों के दौरान इस देश में काफी जहर फैल गया है, और इस जहर का लोगों के दिमाग पर असर पड़ा है । हमें इस जहर का सामना करना चाहिए, हमें इस जहर को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिए लेकिन इसके लिए हमें हिंसा और नफरत को त्यागना होगा हम केवल प्रेम से ही इस नफरत के जहर को खत्म कर सकते हैं। केनेडी और नेहरू ने बताया की एक सच्चा नेता वो होता है जो सच और देश को जिंदा रखने के लोगो के बीच अपनी जान की परवाह किए बगैर जाता है। वो अपने समाज और देश को जोड़ने के लिए खुद को भी कुर्बान करने में परहेज नही करता है। ऐसी स्थिति में ही एक लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष राज्य की नींव मजबूत की जाती है। जब सारी साम्प्रदायिक और विभाजनकारी शक्तियां उसे तोड़ने की साजिश रचती हैं।

आज पूरे विश्व और भारत का दुर्भाग्य है कि ऐसे नेता अब बन नही पा रहे हैं लेकिन मैं आशावादी हूँ। रात के इस घनघोर अंधेरे में एक नई सुबह की उम्मीद किरण देख रहा हूँ.. मुझे यकीन है वो सुबह फिर तो आएगी।

-अपूर्व भारद्वाज

एमसीएफ की फाइलों में यह सड़क कई बार बन चुकी है, धरती पर कब बनेगी

लंबे आंदोलन के बाद हार्डवेयर चौक से प्याली चौक तक जाने वाली सड़क बनना शुरू हुई। लेकिन हालत ये है कि शहर की अधिकतर सड़कें जर्जर हालत में हैं। इस सड़क की हालत देखिए। हार्डवेयर चौक से सेक्टर 22, 23, 24 जाने वाली मुख्य सड़क का बीते काफी समय से बुरा हाल है। श्मशान घाट के सामने सड़क पूरी तरह खराब है। आए दिन लोग यहां घायल होते रहते हैं। नगर निगम फ़रीदाबाद यहां कभी पत्थर डाल देता है तो कभी मिट्टी भर देता है लेकिन सड़क ठीक नहीं करता। ऐसा ही हाल हार्डवेयर चौक के पास का भी है।